I shall request Member, to rise in their seats for a minute as a mark of respect to the memory of Shri Maithilisharan Gupta.

(Hon. *Members then stood in tilence for one minute)*

Secretary will convey to the members of the bereaved! family th« profound sorrow and sympathy of this House.

ANNOUNCEMENT *RE.* ALLOTMENT OF TIME FOR THE CONSIDERATION OF THE MINERAL OILS (ADDITIONAL DUTIES OF EXCISE AND CUSTOMS) AMENDMENT BILL, 1964

MR. CHAIRMAN: I have to inform Members that under rule 186(2) of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Rajya Sabha, I have allotted one hour for the compMion of all stages involved in the consideration and return of the Mineral Oils (Additional Duties of Excise and Customs) Amendment Bill, 1964, by the Rajya Sabha, including the consideration and passing of amendments, if any, to the Bill.

THE APPROPRIATION (NO. 6) BILL, 1964—contd.

MR. CHAIRMAN: Mr. Chordia. Before they begin, I hope that Members know that they will have to confine themselves to ten minutes each.

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया (मध्य प्रदेश) : अध्यक्ष महोदय, जो पूरक अनुदानें प्रस्तुत की गई हैं उनके सम्बन्ध में सब से पहले मैं शिक्षा आयोग के बारे में चर्चा करना चाहूंगा। शिक्षा आयोग की नियुक्ति और उसके लिए जो विदेशों से सहयोग लेने की भावना इसमें प्रकट की है उससे मझे बहुत दुख होता है कि एक समय था कि भारतवर्ष जगतगुरु के स्थान पर था और आज वह भारत बाहर के लोगों से भीख मांग रहा है शिक्षा प्राप्त करने के लिए, एक समय था जब कि यह देश सोने की चिड़िया कहा जाता था और आज हमको भीख मांगनी पड़ रही है बाहर से अनाज के लिए, खाने के लिए, धन के लिए, सब बातों के लिए; और शिक्षा के मामले में भी हम बाहर वालों का मुंह देखें क्या हमारे यहां शास्त्री नहीं हैं, क्या हमारे यहां आचार्य नहीं हैं, क्या हमारे यहां पंडित नहीं हैं लेकिन चूंकि उनके पास डाक्टरेट का लेबिल नहीं है इसलिये उनकी पूछ नहीं है उनके सामने जो कि डाक्टरेट के लेबिलधारी हैं या जो कि विदेशों से अपनी शिक्षा ग्रहण कर के आते हैं। तो ऐसी स्थिति में मैं प्रार्थना करूंगा कि अगर हम चाहते हैं कि हमारा जो सुप्त भारत है वह जाग्रत हो, अगर हमें भारत की सोई हुई आत्मा पर जो राख का आवरण जम चुका है उसे जाग्रत करना है, तो यह अत्यन्त आवश्यक है कि हमारे यहां जो मनीषी हैं, विद्वान हैं, पंडित हैं, शास्त्री हैं उनका सहयोग एजुकेशन कमिशन में लें और उसके बाद जो भी सिफारिशें की जाने वाली हैं उनको कार्यान्वित करें।

अध्यक्ष महोदय, इसमें जो जानकारी दी गई है कि कमिशन के कौन कौन सदस्य होंगे उसको देख कर के कुछ ऐसा लगता है कि जिनका शिक्षा के क्षेत्र में अभी तक नाम तक नहीं सुना गया ऐसे लोगों को इसमें शामिल किया गया है और उनसे अपेक्षा यह है कि उनके द्वारा हमारी शिक्षा की व्यवस्था का अध्ययन हो। हमारे पूर्व वक्ता सिन्हा साहब ने हिन्दी के बारे में बहुत अच्छा कहा था कि हिन्दी की लहर तेजी से आगे बढ़ रही है और उसकी तेजी को कोई रोक नहीं सकता किन्तु ये कंकड़ और पत्थर उसके प्रवाह को रोकने का प्रयत्न कर रहे हैं। प्रार्थना है कि उनका हित इसमें है कि